Hand-writing (Part-2)

बच्चा आगे अपने भैया से कहता है कि मेरे लिए ऐसा नाव बना दो जो छप-छप कर कूड़े से अड़ती हुई, बारिश की बूंदों और पानी की लहरों से लड़ती हुई निरन्तर आगे बढ़ती जाती है। जो सबको पसंद आए। जल्दी से ऐसा नाव तैराकर मुझे खुश कर दो। भैया मेरे जल्दी से आओ।

लेकिन प्रस्तुत कविता के अनुसार भैया को बारिश और नाव में कोई रुचि नहीं है। वह अपने छोटे भाई से बोल पड़ता है कि यह सब मेरे बस का नहीं है। फिर भी बालक अपने भैया से आलस छोड़कर जल्दी आने का अनुरोध कर रहा है...॥

नाव बनाओ नाव बनाओ कविता का उद्देश्य

नाव बनाओ नाव बनाओ कविता के अनुसार आलस एक प्रकार का रोग है | ये हमसे आनन्दित होकर जीवन जीने का पल छीन लेता है | अत: हमें आलस से दूर रहना चाहिए | ताकि हम अपनी इच्छानुसार सफलता हासिल कर सकें |